राजस्थान के डूँगरपुर जिले की जैव–विविधता का अध्ययन'' (पक्षियों के विशेष संदर्भ में)

मोनिका रोत
विभागाध्यक्ष
भूगोल विभाग
एस.बी.पी.राजकीय
महाविद्यालय
डूंगरपुर, राजस्थान

धर्मेन्द्र पाटीदार
व्याख्याता
भूगोल विभाग
एस.बी.पी.राजकीय
महाविद्यालय
डूंगरपुर, राजस्थान

सारांश

विविधता प्रकृति का नियम है। यह प्रकृति के सभी जीवधारियों में सार्वभौमिक रूप से उपस्थित होती है। वैज्ञानिकों द्वारा लगाए गये अनुमान के अनुसार पृथ्वी पर जीव की उत्पत्ति 300 करोड वर्ष पूर्व जाती है। जीवधारियों में पाई जाने वाली विभिन्नताएँ लाखों–करोडों वर्षो में हुए कार्बनिक उद्विकास की परिणति है। संपूर्ण जैव मण्डल इन्ही विभिन्नताओं के माध्यम से संचरित और नियंत्रित होता है। इसे ही वैज्ञानिक भाषा में ''जैव विविधता'' कहा जाता है। जैव विविधता की दृष्टि से भारत वैश्विक पैमाने पर एक समृद्ध देश माना जाता है। देश का क्षेत्रफल विश्व के सम्पूर्ण स्थलीय भाग का 2.16 प्रतिशत है परन्तु विश्व में पायी जाने वाली सम्पूर्ण जैव विविधता का लगभग 8 प्रतिशत यहां विद्यमान है। अतः भारत विश्व के 12 सबसे अधिक जैव विविधता वाले राष्ट्रों में से एक है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जैव विविधता की अतुलनीय उपादेयता है। सदियों से मानव जाति का जैवविविधता के प्रति उपभोगात्मक दृष्टिकोण रहा है। जनसंख्या वृद्धि, शहरों का विस्तार तथा प्रदूषण, जैव विविधता को बहुत तेजी से नष्ट कर रहा है।

मुख्य शब्द : क्षेत्रफल, जैवविविधता, उपभोगात्मक, दृष्टिकोण

प्रस्तावना

नैसर्गिक सुषमा से समृद्ध लबालब जलाशयों के तटों व वृक्षों पर विचरण करते देशी–विदेशी परिन्दे और सघन वनाच्छादित क्षेत्रों में उन्मुक्त घूमते वन्यजीवों के लिये डूंगरपुर जिले की अपनी अलग ही पहचान है और यही कारण है कि इस अंचल के प्रति अब विदेशी शोधकर्ता भी आकर्षित होने लगे है। ऐसा माना जाता है कि पक्षियों की प्रवास यात्राएँ सबसे लंबी चुनौती भरी और विलक्षण होती हैं। साबेला–सुनेरिया तालाबों में पिछले कुछ वर्षो से यहाँ पर शीतकाल में बडी संख्या में प्रवासी पक्षियों का दूर दराज के क्षेत्रों से आगमन हो रहा है।

यह अध्ययन डूँगरपुर जिले के साबेला एवं सुनेरिया तालाब का किया गया है। नैसर्गिक सौन्दर्य से परिपूर्ण जिला मुख्यालय पर दूसरा बडा तालाब साबेला–सुनेरिया बायपास (डूँगरपुर– अहमदाबाद) सडक मार्ग के सहारे बांयी तरफ साबेला एंव दायीं तरफ सुनेरिया अवस्थित है। इस तालाब का उपयोग स्थानीय लोग नहाने, मछली पालन व मुख्य रूप से कृषि के लिये करते है। तालाब का प्राकृतिक सौन्दर्य अद्वितीय है। मौसम परिवर्तन तथा भोजन की तलाश जैसे कारणों से पक्षी हर साल प्रवास यात्राऐं करते है।

साबेला–सुनेरिया तालाब की 150 किलोमीटर की परिधि में लगभग 42 प्रजातियों के पक्षी पाए जाते है। इनमें करीब 20 प्रजातियाँ प्रवासी पक्षियों की है जो प्रतिवर्ष शीतकाल में प्रवास पर आती है। इस तालाब के किनारे अवस्थित बबूल, नीलगिरी एवं अन्य झाडियाँ पक्षियों के प्रजनन के दौरान घोंसले बनाने में उपयोगी है जिनमें कई स्थानीय जलीय पक्षी प्रतिवर्ष मानसून के दौरान प्रजनन करते है।

अध्ययन का महत्व

जलीय पक्षी अनेक रूपों में हमारी सहायता करते है। एक ओर जहां ये पक्षी कीटों को नष्टकर फसलों की रक्षा करते है वही दूसरी ओर जलीय परितंत्र को भी सुरक्षित रखते है। पूरा जलीय परितंत्र अन्तः जातीय तथा अन्तरा जातीय सम्बन्धों का एक जाल है जहाँ प्रत्येक जीव का अपना महत्व होता है। जलीय परितन्त्र के प्रत्येक स्तर पर उपलब्ध जैव विविधता तंत्र की गत्यात्मकता और स्थायित्व को बनाए रखती है। अपने आस–पास की जैव विविधता को पहचानना और आनेवाली पीढियों के लिए संरक्षित करना हम सभी का दायित्व है।

इस क्षेत्र में सारस क्रेन की बडी संख्या और अन्य स्टॉर्क्स की उपस्थिति को देखते हुए जर्मनी के स्कॉलर बर्नर ब्राउन और इंग्लैण्ड की

शेरलॉन गत वर्षो से लगातार यहाँ आ रहे है और इन पक्षियों पर सतत् शोध कर रहे है। विदेशी शोधकर्ताओं का साथ पाकर स्थानीय बर्डवॉचर और अन्य पर्यावरण प्रेमी भी उत्साहित है और वे भी अपने ही क्षेत्र में आने वाले इस प्रवासी परिंदों के अध्ययन में रूचि ले रहे है। यहाँ के निवासियों के लिए गर्व का विषय है कि चार ''संकट की आशंका ग्रस्त'' प्रजातियों में जांथिल, लोहारजंग, सफेद बुज्जा, तथा बानर्वे का न सिर्फ देखा जाना बल्कि यहा प्रजनन करना यहाँ की जैव विविधता को समृद्ध करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य राजस्थान के डूंगरपुर शहर के साबेला एवं सुनेरिया तालाब में विचरण करने वाले स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों का अध्ययन करना है। इस हेतु कुछ विशिष्ट उद्देश्य बनाये गये है, जो निम्न प्रकार है–

1 डूँगरपुर शहर के साबेला एवं सुनेरिया तालाब में वातावरण की ओर ध्यान आकर्षित करता है। जो प्रवासी पक्षियों के लिये उत्कृष्ट आवास प्रदान कर रहे है।

2 इस अध्ययन में स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों के लिए अनुकूल परिस्थितियों का अध्ययन करने के साथ–साथ उनसे संबंधित समस्याओं और उनके निवारण के लिये एक्शन प्लान एवं सुझाव प्रदान करना है।

3 जिले की नैसर्गिक सुषमा से समृद्ध इस अंचल में लबालब जलाशयों के तटों व वृक्षों पर विचरण करते देशी विदेशी परिन्दे और सघन वनाच्छादित क्षेत्रों में उन्मुक्त घूमते वन्यजीवों से इस जिले की अपनी अलग ही पहचान है जिसकी फिल्म डाक्यूमेन्ट्री एवं लिखित दस्तावेज की आवश्यकता को महसूस किया गया है।

4 उदयपुर मार्ग स्थित साबेला एवं सुनेरिया जलाशय में वर्ष पर्यन्त जल रहने से शहर के प्रतापनगर, इन्द्रानगर, आदर्शनगर, गांधी आश्रम, नवाडेरा, राजपुर आदि क्षेत्रों का भूजल स्तर पर भी अन्य क्षेत्रों की तुलना में अच्छा रहता है। मलबा डालकर अतिक्रमण के प्रयास से यह क्षेत्र सिमट रहे है अतः इनके संरक्षण की आवश्यकता है।

शोध विधि एवं उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु दक्षिणी राजस्थान के वागड़ प्रदेश में स्थित डूंगरपुर शहर के साबेला–सुनेरिया तालाब को उद्देश्यपूर्वक चुना गया है। अतीत में भीलों की पाल या डूँगरिया भील की ढ़ाणी कहा जाने वाला, राजस्थान प्रदेश के सुदूर दक्षिण में अरावली की उपत्यकाओं के आँचल में अवस्थित जनजाति बहुल डूँगरपुर जिला $23^0 20'$ से $24^0 01'$ उतरी अक्षांश एवं $73^0 21'$ से $74^0 23'$ पूर्वी देशान्तर के बीच फैला हुआ है। जिले की पूर्व से पश्चिम की अधिकतम लम्बाई 105 कि.मी. एवं उत्तर से दक्षिण के बीच की अधिकतम चौडाई 72 कि.मी. है। जिले का सामान्य धरातल समुद्रतल से 320 मीटर ऊँचा है जबकि पहाडियाँ 552 मीटर ऊँची है। जिले का अधिकांश भाग पर्वतीय प्रकृति का है। जिले के गलियाकोट कस्बे से कर्क रेखा गुजरती है। जिले में माही, सोम, मोदर, मोरन, वात्रक आदि नदियां प्रवाहित होती है। सोम नदी उदयपुर जिले एवं माही नदी बाँसवाडा जिले के साथ इसकी सीमाओं का निर्धारण करती है। सोम कमला अम्बा, अमरपुरा, लोडेश्वर, मारगिया यहाँ के प्रमुख बांध है।

यह आर्द्र जलवायु वाला क्षेत्र है। यहाँ जुलाई से अक्टूबर माह के बीच वर्षा हो जाती है। प्रतिवर्ष यहाँ की औसत वर्षा लगभग 761.7 मिलीमीटर होती है। वर्षा काल में छोटे–बडे सभी जलाशय पानी से लबालब भर जाते है और उनके आसपास स्थित नम भूमि वनस्पति से आच्छादित हो जाती है। सेजिटेरिया अन्य जलीय पौधे जिसमें टेरिडोफाइट्स और एल्गी भी जल में व्याप्त होते है, ये वनस्पति तंत्र प्राथमिक उपभोक्ताओं जैसे मछली, शाकाहारी जलीय पक्षी, टेडपोल आदि के लिए भोजन (ऊर्जा) के स्रोत है। प्राथमिक उपभोक्ताओं पर शिकारी पक्षी स्टार्क, आइबिस, कॉर्मोरेनट आदि एवं द्वितीयक उपभोक्ता आश्रित होते है। प्रत्येक स्तर के उपभोक्ता में आवास व भोजन के अनुरूप अनुकूलन पाया जाता है, यह अनुकूलन उसकी शारीरिकी में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

इस अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक समंक प्रयुक्त किये गये। द्वितीयक समंक विभिन्न सरकारी प्रतिवेदनों, एवं राजस्थान सरकार के वन विभाग से प्राप्त किये गये हैं।

प्रदत्तों का विश्लेषण

राजस्थान के डूंगरपुर जिले में विविध प्रजातियों के पक्षी विचरण करते है। यहां वन विभाग डूंगरपुर द्वारा नबम्बर 2013 में की गयी पक्षी गणना में विविध पक्षियों को देखा गया है। इस गणना में देखे गये पक्षी तथा उनकी संख्या को सारणी 1 में देखा जा सकता है।

सारणी– 1

जलीय पक्षी रिपोर्टः नवम्बर 2013

क्र. स.	नाम पक्षी	जलाशयों में देखे गए पक्षियों की कुल संख्या
1	*Bar-headed Goose*	76
2	*Greyleg Goose*	270
3	*Northern Pintail*	562
4	*Cotton Teal*	447
5	*Eurasian Wiglon*	17
6	*Common Teal*	10
7	*Lesser Whistling Teal*	63
8	*Common Coot*	3293
9	*Common Pochard*	164
10	*Tufted Pochard*	248
11	*Spot-billed Duck*	174
12	*Ruddy Shelduck*	479
13	*Gargeney*	48
14	*Shoveller*	130
15	*Black necked stork*	29
16	*White Pelican*	27
17	*Grey Heron*	52
18	*Curlew*	04
19	*Common Sanpiper*	094
20	*Little Ringed Plover*	103

21	*Black tailed Godwit*	35
22	*Common Snipe*	13
23	*Saras Crane*	43
24	*Darter*	06
25	*Black headed Ibis*	30

स्रोतः वन विभाग डूँगरपुर, राजस्थान

इस प्रकार सारणी 1 से स्पष्ट है कि जिले में विभिन्न प्रजातियों के पक्षी विचरण करते है। नवम्बर 2013 में सर्वाधिक ''कॉमन कूट'' पक्षी देखे गये जिनकी संख्या 3293 थी। तत्पश्चात् ''नॉर्थर्न पिनटैल'' तथा ''रूड़ी शेल्ड़क'' को देखा गया जिनकी संख्या क्रमशः 562 एवं 479 थी।

इस क्षेत्र के लिए सौभाग्य और गर्व की बात है कि यहाँ उपलब्ध जैव विविधता के कारण ''संकटापन्न जाति'' का पक्षी ''सारस क्रेन'' यहाँ देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त ''संकट की आंशका'' से ग्रस्त चार प्रजातियों के पक्षी भी यहाँ के जलाशयों में काफी संख्या में देखे जा सकते है। यही नहीं उपयुक्त परिस्थितियों की उपलब्धता के कारण इन्होंने यहाँ प्रजनन करना भी प्रारम्भ कर दिया है। यह भी देखा गया कि गहरे जल स्रोतो की अपेक्षा उथले जल स्रोतों जैसे वन विभाग द्वारा वन क्षेत्रों में बनाए गए छोटे एनीकटों पर ''जैव विविधता'' की अधिकता है। इन एनीकटों में भरा पानी व नम भूमि वर्ष पर्यन्त जलीय पक्षियों को आवास, भोजन व सुरक्षा प्रदान करती है। अतः वन क्षेत्रों में ऐसे कई एनीकटों का निर्माण होना चाहिए। इससे ''जैव विविधता'' में वृद्वि की संभावना है।

साबेला–सुनेरिया तालाब में देश–विदेश की अनेक प्रजातियों के प्रवासी पक्षी आते है। साथ ही पक्षियों की स्थानीय प्रजातियां भी यहां विचरण करती है। इन जलाशयों में वर्ष 2013 में देखे गये विविध प्रकार के पक्षी तथा उनकी संख्या को सारणी 2 में देखा जा सकता है।

सारणी– 2

चयनित जल स्रोतों पर देखे गए पक्षियों का प्रेक्षण माह एवं संख्याः वर्ष–2013

क्र. स.	नाम पक्षी	प्रेक्षण माह	संख्या	स्थानीय अथवा प्रवासी
1	*Lesser Whistlingduck*	नवम्बर से फरवरी	44	शीतकालीन प्रवासी
2	*Comb Duck*	वर्ष पर्यन्त	18	स्थानीय
3	*Greylag Goose*	नवम्बर से फरवरी	08	शीतकालीन प्रवासी
4	*Ruddy Shelduck*	नवम्बर से फरवरी	12	शीतकालीन प्रवासी
5	*Gadwall*	नवम्बर से फरवरी	06	शीतकालीन प्रवासी
6	*Eurasian Wigeon*	नवम्बर से फरवरी	04	शीतकालीन प्रवासी
7	*Spot-billed Duck*	नवम्बर से फरवरी	43	स्थानीय
8	*Northern Pintail*	वर्ष पर्यन्त	20	शीतकालीन प्रवासी
9	*Northern Shovler*	नवम्बर से फरवरी	07	शीतकालीन प्रवासी
10	*Common Pochard*	नवम्बर से फरवरी	18	शीतकालीन प्रवासी
11	*Common Coot*	नवम्बर से फरवरी	55	शीतकालीन प्रवासी
12	*Painted Stork*	वर्ष पर्यन्त	02	शीतकालीन प्रवासी
13	*Wooly-necked Stork*	वर्ष पर्यन्त	02	स्थानीय
14	*Asian Openbill*	वर्ष पर्यन्त	391	स्थानीय/प्रवासी
15	*Eurasian Spoonbill*	वर्ष पर्यन्त	19	स्थानीय
16	*Little Egret*	वर्ष पर्यन्त	63	स्थानीय
17	*Intermediate Egret*	वर्ष पर्यन्त	62	स्थानीय
18	*Cattle Egret*	वर्ष पर्यन्त	66	स्थानीय
19	*Grey Heron*	वर्ष पर्यन्त	06	स्थानीय/प्रवासी
20	*Purple Heron*	वर्ष पर्यन्त	20	स्थानीय
21	*Indian Pond Heron*	वर्ष पर्यन्त	24	स्थानीय
22	*Black-Crowned Night Heron*	वर्ष पर्यन्त	01	शीतकालीन प्रवासी
23	*Great Painted Snipe*	नवम्बर से फरवरी	05	स्थानीय
24	*Red-wattled Lapwing*	वर्ष पर्यन्त	156	स्थानीय/प्रवासी
25	*Little ringed Plover*	नवम्बर से	03	शीतकालीन प्रवासी
26	*Black-tailed Godwit*	नवम्बर से फरवरी	03	शीतकालीन प्रवासी
27	*Black Ibis*	नवम्बर से फरवरी	10	स्थानीय/प्रवासी
28	*Black headed Ibis*	वर्ष पर्यन्त	30	शीतकालीन प्रवासी
29	*Glossy Ibis*	नवम्बर से फरवरी	20	स्थानीय
30	*White-breasted Ibis*	वर्ष पर्यन्त	09	स्थानीय
31	*Purple Swamphen*	वर्ष पर्यन्त	46	स्थानीय
32	*Pheasant-tailed Jacana*	वर्ष पर्यन्त	72	स्थानीय
33	*Bronze-winged Jacana*	वर्ष पर्यन्त	19	स्थानीय
34	*Common Kingfisher*	नवम्बर से फरवरी	01	शीतकालीन प्रवासी
35	*White-throated Kingfisher*	वर्ष पर्यन्त	21	स्थानीय
36	*Pied Kingfisher*	वर्ष पर्यन्त	16	स्थानीय
37	*Little Cormorant*	वर्ष पर्यन्त	90	स्थानीय

38	*Indian Cormorant*	वर्ष पर्यन्त	90	स्थानीय
39	*Greet Cormorant*	नवम्बर से फरवरी	03	शीतकालीन प्रवासी
40	*Green Bee-eater*	नवम्बर से फरवरी	37	शीतकालीन प्रवासी
41	*Black Drongo*	वर्ष पर्यन्त	15	स्थानीय
42	*Black-winged Stilt*	नवम्बर से फरवरी	38	शीतकालीन प्रवासी
43	*Common Sandpiper*	नवम्बर से फरवरी	11	शीतकालीन प्रवासी

स्रोतः प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित।

सारणी 2 में वर्ष 2013 में प्रेक्षित किये गये विभिन्न प्रवासी एवं स्थानीय पक्षियों की संख्या से स्पष्ट होता है कि यहाँ विभिन्न महीनों में अलग–अलग प्रकार के पक्षी प्रजनन हेतु आते है। विशेष कर शीतकाल में प्रवासी पक्षियों की संख्या अधिक देखी जा सकती है। कुछ पक्षी स्थानीय एवं प्रवासी दोनों यहां प्रजनन हेतु आते है जो कि सारणी 2 से स्पष्ट होता है।

वर्तमान में साबेला–सुनेरिया तालाब के अस्तित्व पर गहरा संकट छाया हुआ है। शोध के दृष्टिकोण से यदि देखा जाए तो कई समस्या उजागर हुई हैं।

1 शहर का बायपास सडक मार्ग पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हो गया है जिस पर वाहन चलने से धूल के गुबार उड़ने से राहगीरों व आस पास घरों, दुकानों पर वायु प्रदूषण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

2 शहर में चल रहे निर्माण कार्यो का मलबा तालाब के किनारे उड़ेला जा रहा है इससे तालाबों की भराव क्षमता तथा आवक मार्ग प्रभावित हो रहे है जैसे शहर के दावतो का अपशिष्ट, बालों की कतरन, पानी वाले सूखे नारियल, कपडों की कतरन, सड़े फल, प्लास्टिक की थैलियाँ, मरे हुए पशुओं आदि को डाला जा रहा है।

3 तालाब के बायें छोर रेलपटरी के सहारे स्थित सुनेरिया क्षेत्र में लगातार पानी सूखने की वजह से तालाब में काई भारी मात्रा में दिखाई दी जा रही है।

4 तालाब में जल निकासी नहीं होने की वजह से तालाबों का पानी बदबू मारता है यह सिलसिला करीब 4 (जुलाई–अक्टूबर) माह तक चलता है।

5 साबेला–सुनेरिया तालाब में वर्तमान में सबसे गंभीर समस्या जल प्रदूषण एवं अतिक्रमण की है। शहर का गन्दा एवं सिवरेज का पानी सीधे तालाब में जा रहा है। इससे तालाब का पानी प्रदूषित हो रहा है। यह सिलसिला यहाँ कई दशक से चल रहा है, लेकिन इस ओर न तो वन विभाग ने ध्यान दिया है और न ही नगर परिषद एवं जिला प्रशासन ने। ऐसे में जीवन दायिनी तालाब में रहने वाले जीवों का जीवन खतरे में है क्योंकि मुख्यतः तालाब के जल का उपयोग स्थानीय ग्रामवासियों द्वारा कृषि कार्य, मछली पालन, नहाने एवं कपड़े धोने के लिये किया जा रहा है। किसी भी तालाब में यदि नाले का पानी मिलता है तो उसमें रहने वाले जीव जन्तुओं को नहीं बल्कि मानव स्वास्थ्य के साथ पूरे पारिस्थितिक तंत्र को नष्ट कर देता है। इस जल में मौजूद कार्बनिक पदार्थ तालाब के पानी में उपस्थित ऑक्सीजन के कारण विघटित हो जाते है। ऐसे में जल में घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है। प्रदूषित पानी से रासायनिक पदार्थो जैसे नाइट्रेट, फास्फेट तथा मानवमल से प्राप्त कार्बनिक पदार्थ एल्गी बैक्टीरिया आदि भोजन के रूप में मिलते है। इससे इनकी संख्या बहुत ज्यादा हो जाती है, जो जल में मौजूद प्राकृतिक ऑक्सीजन को नष्ट कर देते है इससे जलीय वनस्पति व प्राणियों के लिए जीवित रहना मुश्किल हो जाता है। इस दौरान कुछ रोग उत्पन्न करने वाले सूक्ष्म जीवाणु भी विकसित हो जाते है। साबुन या डिटरजेंट में मौजूद फॉस्फेट जो जल को मृदु बनाता है तथा अन्य विषैले पदार्थ की उपस्थिति से तालाब का जल प्रदूषित हो जाता है, जिससे अनेक प्रकार की बीमारियाँ अमीबायोसिस, हैजा आदि रोग उत्पन्न हो जाता है। प्रदूषित जल के उपयोग से जलीय जीवों एवं मानव स्वास्थ्य पर उसका हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है।

6 विभिन्न धार्मिक व त्योहारों के दौरान बड़ी संख्या में मूर्तियों का उसकी सज्जा व पूजन सामग्री के साथ तालाब में विसर्जन किया जा रहा है। उक्त विसर्जित सामग्री में विभिन्न सिन्थेटिक पदार्थ, केमिकल, रंग, पेन्ट, वस्त्र, पॉलीथीन, थर्माकोल, फूल–पत्तियाँ, फूल मालाएँ सजावटी सामग्री इत्यादि डाले जा रहे है। लगातार इस प्रकार के अपशिष्ट तालाब में मिलने के कारण जल की प्राकृतिक गुणवत्ता प्रभावित होती है। साथ ही इन अपशिष्टों के कारण पानी में घुलित ऑक्सीजन की मात्रा कम होने की सम्भावना रहती है जिससे जलीय जीवन प्रभावित होता है।

7 अत्यधिक शोरगुल होने (रेल पटरी अवस्थित है) से भी प्रवासी पक्षी अपना स्थान परिवर्तित कर रहे है।

निष्कर्ष

साबेला–सुनेरिया तालाब शहर के सबसे बड़े जल स्रोतों में से एक है। यहां सैकडों प्रवासी पक्षी अपना डेरा डाले हुए रहते है। आज सबसे ज्यादा आवश्यकता है जन चेतना की। यदि समय रहते इस पर ध्यान नहीं दिया तो स्थानीय जलीय पक्षी एवं दुर्लभ पक्षी विलुप्त हो जाएंगे। साथ ही यदि जल स्रोतों का जल स्तर यदि घटता है तो प्रवासी पक्षी इस क्षेत्र में नही आ पायेगें। इनकी महत्ता को समझते हुए इन जल स्रोतों में प्रबन्धन एवं संरक्षण की आवश्यकता है। प्रशासन को इस ओर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही साबेला सुनेरिया तालाब को सुरक्षित रखने का दायित्व हर नागरिक का हो ताकि ये जलाशय एवं पर्यटक स्थल सुरक्षित रह सकें तथा पारिस्थितिक संतुलन बना रहे।

सुझाव

1 राजस्थान में 24 इम्पोर्टेन्ड बर्ड एरिया घोषित है वर्तमान सूची का पुनः मूल्यांकन चल रहा है ऐसी स्थिति में निर्धारित नियमों के तहत राजस्थान के नए जलाशयों साबेला तालाब का सर्वे किया जाना चाहिए ताकि उन्हे भी इम्पोर्टेन्ड बर्ड एरिया घोषित किया जा सके।

2 क्षेत्र में न कोई अभयारण्य है और न ही कोई राष्ट्रीय पार्क परन्तु जलीय पक्षियों के जिले में 60 जलाशय ऐसे

है जहा परिंदों का स्वर्ग स्थल माना जा रहा है। इस दिशा में पक्षी विशेषज्ञ, जिला प्रशासन, वन विभाग तथा पर्यावरण प्रेमी मिलकर ठोस प्रयास करें तो निश्चित रूप से भविष्य में सफलता मिलेगी।

3 साबेला–सुनेरिया तालाब स्थानीय एवं प्रवासी ''पक्षियों का आइडल स्पॉट'' है। जैव विविधता एवं सौन्दर्य विरासत से भरपूर इस सम्पदा को यदि आजीविका मिशन से जोड़ दिया जाए तो यहाँ के लोगों को रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे।

4 सौन्दर्य एवं पर्यटन दृष्टिकोण से तालाब तथा बायपास सड़क मार्ग पर रिंगवाल बनाई जाए।

5 तालाब के सामने वाले भाग में जहाँ वर्तमान में ग्रामवासियों द्वारा कृषि कार्य किया जा रहा है। जहॉ कृषि नहीं की जा रही है वहॉ रेवेन्यु जगह पर छोटे–छोटे (पेंच टापूनुमा) प्रवासी पक्षी प्रजनन हेतु बनावें तथा पर्यटक के लिए दूर से फोटोग्राफी के लिए स्थान चयनित किये जाऐ। पेंच में चारों तरफ भी रिंगवाल बनाई जावे ताकि उस क्षेत्र में मानवीय हस्तक्षेप न हो।

6 बायपास सडक के सहारे एवं पेंच क्षेत्र में खेजडी, बबूल के वृक्ष लगाये जाए।

7 तालाबों के किनारे पर टाइल्स, रिंगवाल पक्षी प्रजाति विवरण सहित बोर्ड एवं (जलीय जैव विविधता संरक्षण) के सन्दर्भ में एवं सोलर लाइट लगाकर सौन्दर्यीकरण किया जाए तो अतिक्रमण की संभावना क्षीण हो जाएगी।

8 प्रशासन साबेला–सुनेरिया तालाब के साथ साथ जिले के अन्य जलाशयों एवं वनों को संरक्षण देवे।

9 पक्षी पर्यटन निधि को बनाना होगा क्योंकि इस जिले में बर्ड वाचिंग एवं पर्यटन की संभावनाएं उपलब्ध है।

10 साबेला–सुनेरिया तालाब में कुछ शिकारी मछली मारने का कार्य करते है। साथ ही ये शिकारी पक्षियों को भी मारने का प्रयास करते है। अतः इन शिकारियों को रोकने की आवश्यकता है।

11 समय समय पर प्रशासन द्वारा तालाब सें जलकुंभी, काई इत्यादि को निकाला जाए।

12 जल प्रदूषण की गंभीर समस्या के समाधान के लिए प्रदूषित जल शुद्धीकरण प्लान्ट लगाने की आवश्यकता है।

13 तालाब के किनारे एक तरफ घाट बनाया जाये साथ ही जल निकासी के लिए नाले की व्यवस्था की जाये।

14 मकर संक्रांति पर्व पर पतंगे उडाने के दौरान कांच व धातु मिश्रित मांझे के उपयोग से पक्षियों के घायल होने की संभावनाएं रहती है। प्रशासन द्वारा सुबह व शाम के समय पतंगबाजी पर प्रतिबन्ध लगाया जावे।

15 साबेला–सुनेरिया तालाब में नई आबादी, आदर्शनगर, शास्त्री कॉलोनी सहित शहर का सीवरेज पानी आ रहा है अतः इन जलाशयों की जैव विविधता की दृष्टि से महत्ता को ध्यान में रख सीवरेज प्लान बनाना जरूरी है।

16 साबेला एवं सुनेरिया जलाशय का सीमांकन किया जाना चाहिए।

17 इस तालाब में कूडा–करकट एवं मलबा डालने पर पूर्ण पाबंदी लगानी चाहिए।

18 जलाशय को प्रवासी पक्षियों की दृष्टि से पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

वर्तमान में सबसे बडी आवश्यकता इस बात की है कि जिन स्थानों को पक्षियों ने अपने आवास हेतु चुना है उन्हें पहचानकर संरक्षण प्रदान किया जाए। प्रकृति में जीवों का संरक्षण हमारी परम्परा रही है। अतः हम अपनी जैव विविधता का संरक्षण कर अपनी परम्परा निभाएं।

संदर्भ सूची

1. India(2006), Publication division, New Delhi.
2. Jadhav,H.V.(1995), "Environmental Pollution", Himalaya Publishing House, Bombay and Delhi.
3. Mcintosh R.P. (1963): Ecosystem ,evolution and relation Patterns of living organisms, American scientist.
4. Macarthur R(1960): On the relative abundance of Species,American Naturalist.
5. Rajasthan Patrika Year Book (2007), Jaipur.
6. कोटपाल कशेरूकी प्राणी विज्ञान पृष्ठ 387.395 ।
7. सिंह, एस. (2004), ''पर्यावरण भूगोल'', प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
8. कमलेश शर्मा जनसम्पर्क अधिकारी, डूँगरपुर।
9. वीरेन्द्र सिंह बेडसा मानद वन्यजीव प्रतिपालक वन विभाग, डूँगरपुर।
10. Website: www.dungarpur.nic.in